S.S. college, Jehanbad

M.A. (Psychology) Semester - II Session - 2018-2020

Paper - VIII (Psychometrics)

Teacher's Name - Dr Vivek Nand Sharma

Topic - Levels of Measurement

मनोवैज्ञानिक विषयों विशेषकर के मनोविज्ञान, शिक्षा एवं व्यवहार के क्षेत्र में मापन का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। मापन का तात्पर्य विभिन्न के अनुसार कुछ अंकों को निर्धारित करने की प्रक्रिया है। Tyler (1963) के अनुसार - "measurement means assignment of numbers according to rules" Stevens (1951) ने मापन के चार स्तर (levels) बताए हैं जो कि एक दूसरे से भिन्न होते हैं। मापन के इन स्तरों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं :-

① नामित या वर्गीकरण मापनी (Nominal or classificatory Scale) :- नामित या वर्गीकरण मापनी वह है जहां संख्याओं का प्रयोग वस्तुओं या व्यक्तियों को केवल वर्गीकरण करने या उनमें विभेद करने के लिए किया जाता है। वस्तुओं या व्यक्तियों का क्रम या स्थान निर्धारित नहीं होता है। इसमें वस्तुओं या व्यक्तियों के केवल दो या दो से अधिक समूह बनाए जाते हैं। जिनमें समूह के सदस्यों में कोई समानता होती है। Siegel (1956) के अनुसार, यह तुलनात्मक संबंधों को व्यक्त करता है। तुल्यता या समानता होती है। यह परावर्ती (reflexive), जैसे - A = A; सममित (Symmetrical), जैसे - यदि A = B तो B = A तथा संक्रामी (transitive), जैसे - यदि A = B और B = C तो A = C होता है। नामित मापनी वास्तव में एक भिन्न तरह की मापनी है। इसमें किसी भी प्रकार की सांख्यिकीय गणना जैसे - औसत, वर्गांक, अनुपात या माध्य का उपयोग नहीं किया जाता है। नामित मापनी में mode, co-efficient of Contingency सम्बन्धी सांख्यिकी का प्रयोग होता है।

② क्रमसूचक मापनी (Ordinal or Ranking Scale) :- क्रमसूचक मापनी का तात्पर्य उस मापनी से है जिसमें वस्तुओं या व्यक्तियों को मापन के आधार पर किसी एक गुण में क्रमानुसार रखा जाता है। जैसे - कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि के आधार पर किसी भी प्रकार की योग्यता, व्यवहार या किसी अन्य व्यक्ति के अनुसार क्रम में रखना। क्रमसूचक मापनी में वस्तुओं या व्यक्तियों के बीच अन्तर तो बताया जाता है लेकिन अन्तर की मात्रा नहीं बताई जाती है। क्रमसूचक मापनी में वस्तुओं या व्यक्तियों के बीच अन्तर समान नहीं होता है। इसमें वस्तुओं या व्यक्तियों को केवल उच्च या निम्न क्रम में रखा जाता है। इसमें वस्तुओं या व्यक्तियों के बीच अन्तर समान नहीं होता है। इसमें वस्तुओं या व्यक्तियों को केवल उच्च या निम्न क्रम में रखा जाता है।

Scanned with CamScanner

का विश्लेषण के अलावा भी कुछ और नीचे अथवा कुछ ऊपर दोनों के पहले - पाकार्ड

अनुपात मापनी में सबसे ऊपर की कोटियों के बीच का अनुपात भी ज्ञात किया जा सकता है। इसी कारण अनुपात मापनी को सबसे उपयुक्त मापनी माना जाता है। अनुपात मापनी में P5 से ऊपर की कोटियों के बीच की दूरी हमेशा समान नहीं होती है। उदाहरण - सामान्य विद्यार्थियों के किसी समूह की उम्र 5 वर्ष, 6 वर्ष, 7 वर्ष, 8 वर्ष, 9 वर्ष, 10 वर्ष हो सकती है। इसमें अनुक्रमांक 1, 2, 3 तक की कोटियों के बीच की दूरी 1 वर्ष है। अनुक्रमांक 3 से 4 की दूरी 2 वर्ष है। अनुक्रमांक 4 से 5 की दूरी 3 वर्ष है। अनुक्रमांक 5 से 6 की दूरी 4 वर्ष है। अनुक्रमांक 6 से 7 की दूरी 5 वर्ष है। अनुक्रमांक 7 से 8 की दूरी 6 वर्ष है। अनुक्रमांक 8 से 9 की दूरी 7 वर्ष है। अनुक्रमांक 9 से 10 की दूरी 8 वर्ष है। स्पष्ट है कि अनुक्रमांक 1 से 10 तक की दूरी समान नहीं है। इसलिए इसे समान मापन नहीं कहा जा सकता है। इसी कारण इसे अनुपात मापनी कहा जाता है। इसमें शून्य बिन्दु भी निश्चित हो

वास्तविक अनुपात-मापनी का प्रयोग नहीं होता है। हाँ यह पता लगाने के लिये कि किसी छात्र को गणित के शून्य प्राप्तांक को क्या सचमुच शून्य कहा जा सकता है कि उसका छात्र की गणित की उपलब्धि नहीं है। अन्तराल मापनी के किसी दो अन्तराल के बीच का अनुपात-मान मापन की इकाई पर निर्भर करता है। अन्तराल मापनी में शून्य बिन्दु पर आधारित होता है। मनमाने मान अनुपात-मापन की इकाई पर निर्भर करता है। अन्तराल मापनी में शून्य बिन्दु पर आधारित होता है। मनमाने मान अनुपात-मापन की इकाई पर निर्भर करता है। अन्तराल मापनी की कई उदाहरण, यथा आदि उनके सांख्यिकीय परिमाण उपलब्ध हैं। इस पर निम्नलिखित दो सांख्यिकी लागू की जा सकती हैं - Mean, Standard Deviation, Product moment Coefficient of Correlation इत्यादि। अन्तराल मापनी पर प्राप्त दो समूहों के समानता या तुल्यता (equivalence) का निर्धारण तब ही किया जा सकता है जब अन्तराल के अन्तर किसी दो समूहों के अन्तरों की इकाई भी समान हो।

(4) अनुपातिक मापनी (Ratio Scale) :- Ratio Scale में अन्तराल मापनी के ही सभी विशेषताओं के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण शून्य बिन्दु भी पाया जाता है। यह भी मापनी में मापन की इकाई लगातार लागू होती है। लेकिन यहाँ बिन्दु मनमाने होता है। जब तक किसी वस्तु या गुण का अभाव न हो तब तक शून्य का अर्थ नहीं होता है। अनुपातिक मापनी का उदाहरण है - लम्बाई, भार या उम्र में मापते हैं। जो वास्तविक शून्य होता है। अनुपातिक मापनी का प्रयोग अधिकतर प्राकृतिक विज्ञानों में होता है। फिर भी यह भी सामाजिक विज्ञानों में भी उपयोग किया जाता है। जैसे - Geometrical mean का coefficient of Variation जिसके मनमाने शून्य बिन्दु की जानकारी पड़ती है, अनिवार्य।

Scanned with CamScanner